Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

जनकवि तुलसीदासः लोकमंगल एवं समन्वय के प्रबल प्रतिपादक

Seema Rani*

M.A. in Hindi (UGC Net)

सार – ***संतकवि गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623) परम भक्त, प्रखंड विद्वान, दर्शन और धर्म के सूक्ष्म व्याख्याता सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक उच्च कोटि के कलाकार, बहुभाषाविद, आदर्शवादी भविष्यद्दष्ण, विश्व प्रेम के पोषक भारतीयता के संरक्षक, लोकमंगल की भावनाओं से परिपूर्ण तथा अदभुत समन्वयकारी थे। उनकी रचना वस्तुतः कला की अमर देन है जिस का गहरा प्रभाव किसी क्षेत्र विशेष या सीमित काल पर ही नहीं बल्कि सार्वभौम तथा सर्वकालीन है।***

उनके द्वारा रचित सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ रामरचितमानस को विश्व के सर्वश्रेष्ठ काव्यों में गिना जाता है। जार्ज ग्रियर्सन ने कहा था - 'महात्मा बुद्व के बाद भारत ही नहीं, एशिया भर में यदि किसी को इतनी लोकप्रियता मिली है तो वे हैं तुलसीदास'।

----------X----------

कविवर सुमित्रानंदन पंत की धारणा है कि रामचरितमानस इतिहास में महाकाव्य तथा महाकाव्य में इतिहास है।

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्त होने के साथ-साथ लोक कल्याणकारी भावना से ओतप्रोत कवि भी थे। उन्होनें धर्म और मुक्ति की प्राप्ति के साधन रूप श्री राम की भक्ति की जो निर्मल धारा प्रवाहित की वह नितांत रूप से लोकमंगलकारी सिद्व हुई। गोस्वामी तुलसीदास की धारणा थी किः-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः

सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कदाश्चित दुख भागभवेत।

अर्थात सभी सुखी रहें। सभी सांसारिक माया मोह से दूर रहें। सभी सत कल्याणमय कार्यों के अभिलाषी रहे और किसी को कोई दुख न हो। इसे गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के आरंभ में ही पूर्णत स्पष्ट कर दिया है।

लगभग 400 वर्ष पूर्व जब प्रकाशन तथा वितरण सुविधाओं का घोर अभाव था। उस समय तुलसीदास के काव्य का जन-जन तक पहुंचना उनकी लोकप्रियता का परिचायक है। उन्होनें राम के आदर्श जीवन कथा द्वारा मानव जीवन की गुत्थियों को सुलझाने का सराहनीय प्रयास किया है। साथ ही राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में समस्त आदर्शो का भली भांति प्रतिपादन किया है। वे अपनी काव्य रचना के लिए जनता की भाषा को माध्यम बनाकर सच्चे अर्थो में जनता के कवि बन गए। उनकी काव्य रचना के मूल में लोकमंगल की नेक भावना निहित है। राम कथा अवधि बोली में लिखी गई हैं जो क्षेत्रीय भाषा थी लेकिन रामरचितमानस ने सभी भाषाओं की सीमा लांघकर विश्वव्यापी स्वरूप प्राप्त किया। कविता के बारे में तुलसी का उदार और व्यापक दृष्टिकोण था।

सरल कवित कीरति विमल सोहे आदरहि सुजान।

सहज बयर विसराई रिपु जो सुनि करहि बखान।।

रामरचित मानस की शैली सहज एवं प्रवाहमय हैं। जिसमें पंडित्य एवं काव्य कौशल का प्रदर्शन नहीं किया गया है। लेकिन भाषा पर असाधारण अधिकार सर्व विद्यमान है। उनका मानना था कि मानव में ईश्वर का निवास होता है। मानव गुण सम्पन्नता एवं पूर्ण विकसित रूप में भगवान सदृश हो जाता है। उसी मानव में बसे हुए भगवान को तुलसीदास ने अपनी रचना का विषय वस्तु चुना। उन्होने सगुण भक्ति की काव्या रचना की। उनका मानना था कि जनता के कल्याण का एक मात्र मार्ग सगुण भक्ति है। उन्होनें निस्वार्थ भाव से भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं अभिवर्धन के लिए एक ऐसे महात्मा की गाथा को प्रस्तुत किया जो जनता का पूज्य होकर भी जनता का महान सेवक था। जनता को जिस आदर्श व्यक्तित्व में अपना ही स्वरूप

www.ignited.in

परिलक्षित होता था। तुलसी के राम प्रजावत्सल है। जिनके राज्य में सब नर करहि परस्पर प्रीति चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति। जहां राजा के लिए प्रजा नहीं वरन प्रजा के कल्याण के लिए राजा सदैव तत्पर है। राजा बिना प्रजा की स्वीकृति के दानादि पुण्य कर्म भी नहीं कर सकता है। यहां तक कि अपने सुपुत्र को राज्य सिंहासन पर भी आसिन नहीं कर सकता। राजा दशरथ राम को राज्य देने को उत्सुक है परन्तु जनता की आज्ञा और इच्छा के बिना इतना बडा निर्णय कैसे ले सकते हैं?

राष्ट्र कवि दिनकर ने लिखा है कि तुलसीदास में भावना और ज्ञान दोनों का प्रार्चुय है। वे उन कवियों की श्रेणी में हैं जो अपनी आनंददायिनि कला का उपयोग मुख्यतः जीवन को प्रभाहित करने के लिए करते है। सभ्यता को परिवर्तित करने और उसके मूल्यों की रक्षा करने को करते है। तुलसीदास की मानवीय करूणा को पलवित करने वाला मूल मंत्र है। परहित सरित धर्म नहीं भाई। पर पीडा सम नहिं अधमाई। धर्म-अधर्म की यह नयी परिभाषा तुलसी ने लोकहित के सिद्वांत पर ही निर्मित की है। उनके लिए मनुष्य का हित सर्वोपरि है अहित नहीं। धर्म, साहित्य और राजनीतिक सबकी एकमात्र कसौटी है सार्वजनिक हित।

जासु राजा प्रिय प्रजा दुखारी,

सो नृप अवस नरक अधिकारी।

राजनीति के मानवीय और अमानवीय चरित्र को पहचानने की कसौटी प्रजा का सुख है। यह तुलसी के लोकवादी, लोकमंगलकारी रूप की पहचान है। राम इस लोकहित के संघर्ष में तुलसी के आत्म शक्ति का प्रतीक है। पर पीडा को अधर्म कहकर तुलसी ने समाज में अन्याय और विषमता को समर्थन देने वालों को अधर्मी कहा है। तुलसी के काव्य में निहित भगवान श्री राम का चरित्र भक्ति-भावना, धर्म निरूपण, दर्शन, जीवन दर्शन तथा नीति आदि के पृष्ठ पर ऐसे सुन्दर पुष्प विद्यमान है। जिनमें निरंतर लोक मंगल की मनोहारी सुगंध निकलती रहती है। इसके अतिरिक्त तुलसी ने समाज में व्यापत विषमता को दूर करने के लिए समन्वय की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन दिया और स्वयं धर्म राजनीति, समाज, आर्थिक, पारिवारिक, नैतिक सभा क्षेत्रों में यथा संभव समन्वय स्थापित करते हुए पारस्परिक विरोध वैमनस्य को दूर कर तत्कालीन जन जीवन में व्यापत घोर अशांति, पापाचार, अनाचार, आदि को दूर करने की सफल चेष्टा की है।

संदर्भ सूचिः-

1. तुलसीदास रामचरितमानस-गीता प्रैस, गोरखपुर।
2. तुलसी ग्रन्थावली - प्रथम द्वितीय खंड, ना. प्र. सभा।
3. सं उदयभानु सिंह - तुलसी।
4. डॉ. गीता रानी शर्मा रामचरितमानस में सांस्कृतिक चेतना।

Corresponding Author

Seema Rani*

M.A. in Hindi (UGC Net)

sunderrathi1977@gmail.com